लाल-पत्थर

एक कृषक के खेत के धान पक्षी खा जाते थे। पक्षियों को भगाने के लिए कृषक ने एक उपाय ढूँढ़ निकाला। वह छोटे-छोटे पत्थर के टुकडों को धागे में बाँधकर पक्षियों के उपर फेंकने लगा। पत्थरों के चोट के भय से पक्षियों का आवागमन कम हो गया।

खेत के समीप ही एक नदी थी। इसी नदी में वह प्रतिदिन स्नान के लिए जाता था। एकदिन जब वह स्नान कर रहा था, तो अचानक नदी के किनारे का कुछ हिस्सा नदी की तेज धार में बह गया। उसी जगह कृषक को एक लाल रंग की मिट्टी की हण्डी दिखायी दी। उसमें बहुत सारे लाल पत्थर थे। उन लाल पत्थरों को देखकर वह उस हण्डी को अपने साथ लाया। हमेशा की तरह उन पत्थरों का भी उपयोग उसने पक्षियों को भगाने के लिए किया। अंतत हण्डी में केवल एक ही लाल पत्थर बच गया। कृषक को विस्मृत हो गया की उस हण्डी में कोई पत्थर भी रखा है।

पक्षियों को भगाने के लिए कृषक को पूरे दिन खेत पर ही ठहरना पड़ता था। इसीलिए उसने खेत में ही एक तरफ अपने रहने के लिए एक झोपड़ी बना ली। एक दिन कृषक की पत्नी अपने छोटे बेटे को गोद में लिए, अपने पति से मिलने खेत पर आयी। उसके बेटे ने उस हण्डी में रखे लाल चमकीले पत्थर को खेलने की वस्तु समझकर हाथ में ले लिया। कृषक की पत्नि घर वापस आयी। रसोईघर में खाना-बनाते समय उसे नमक नहीं मिला। जब वह नमक खरीदने के संबंध में सोच रही थी, तो इसी मध्य उसकी नजर बेटे के हाथ में रखे उस चमकीले लाल पत्थर पर पड़ी। उसने मन में यह विचार किया कि शायद दुकानदार इस चमकीले पत्थर के बदले में नमक दे दे। यह सोचकर कृषकभार्या दुकान पर गयी। दुकानदार ने उससे कहा, ''इस पत्थर के बदले मैं तुम्हें कुछ भी नहीं दे सकता। तुम इसे अपने पास ही रख लो।''

ठीक उसी समय एक जौहरी भी उस दुकान पर सामग्री लेने आया था। जैसे ही उसकी नजर उस चमकते लाल पत्थर पर पड़ी, उसकी आँखें खुली की खुली रह गयीं। उसने कृषक की पत्नी से कहा, ''यह पत्थर मुझे दे दो, मैं तुम्हें नमक खरीद देता हूँ।'' पत्थर को हाथ में लेते ही वह समझ गया कि वह साधारण पत्थर नहीं बल्कि लाल मणि है, उसने मन में सोचा कि इस अमूल्य वस्तु की कीमत नहीं लगाई जा सकती। कृषक की पत्नी को उसने बहुत सारे धन-रत्न प्रदान किए। तत्पश्चात् उसके निवास हेतु उसकी झोपड़ी की जगह एक भव्य भवन का निर्माण करवा दिया।

कृषक के खेत की फसल कट जाने के पश्चात्, वह अपनी झोपड़ी पर, जहाँ उसकी पत्नी और पुत्र रहते थे, वापस आया। परन्तु बहुत ढूँढ़ने के बाद भी उसे अपनी कुटिया नहीं दिखी। वह सोचने लगा - उसकी कुटिया कहाँ चली गयी और यह आलीशान भवन किसका है? अभी वह यह सब सोच ही रहा था कि अचानक उस भवन से उसकी पत्नी निकली और उसे उसके भीतर ले गयी। उसने कहा, ''हमारा बेटा जो लाल पत्थर खेत पर से लाया था उसी की बदौलत ये सारी सुविधाएँ मिली है।'' तदुपरांत उसने सारी पूर्व घटित घटना उससे कह सुनाया। पूरी कहानी सुनते ही

कृषक उसी क्षण ''हाय-हाय'' कहकर सिर पकड़कर बैठ गया और कहने लगा - ''मैं बहुत बड़ा मूर्ख हूँ। साधारण पत्थर जानकर मैंने उन बहुमूल्य रत्नों को पक्षियों को भगाने में नष्ट कर दिया। जब एक पत्थर से मुझे इतना आलीशान घर एवं इतनी सारी अकूत संपदा प्राप्त हुई तो अगर मेरे पास वे सारे पत्थर होते तो मेरे पास सात राजाओं जितना धन होता। मैं अपनी अज्ञानतावश इतनी बहुमूल्य संपदा से हाथ धो बैठा।''

'श्वास-प्रश्वास' मनुष्य की बहुमूल्य संपदा होती है। इस कहानी में इसे ही लाल मणि कहा गया है। जीवरूपी कृषक इसका मर्म नहीं जानता, इसी कारण वह इन्द्रियरूपी पक्षियों के पोषण हेतु इस खजाने का अपव्यय करता है। अगर ईश्वर की अनुकंपा हुई तो जौहरी रूपी सद्गुरु का साक्षात्कार होता है। वे महापुरुष ही इस जीव को श्वास-प्रश्वास की बहुमूल्यता से अवगत कराते हैं एवं उनके निर्देशानुसार श्वास-प्रश्वास के कला-कौशल में पारंगत होने पर जीव को आत्मधन सुलभ होता है।

(*'बालानंद गल्पमालिका' से संगृहित*)

–मातृचरणाश्रित श्री सुब्रत कुमार पण्डा